# अच्छे अच्छे नाम अल्लाह के

## ( अस्मा-ए-हुस्ना )
## और
## नैतिक मूल्य

★

निर्देशन :

**मौलाना अबुल हसन अली नदवी**

संकलन :

**मुहम्मद हसन अंसारी**

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्

www.abulhasanalinadwi.org

नगराम (लखनऊ)

के

सय्यद फ़ारूक़ अहमद रिज़वी

के

सौजन्य से

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

## विषय-सूची


| क्रमांक | विषय | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | दो शब्द | | |
| 2 | हिन्दी भाषा में अल्लाह का अर्थ | — | 1 |
| 3 | ईश्वर और भक्त का सम्बन्ध | | |
| 4 | सम्बन्ध गुणों के अधीन हैं | — | 2 |
| 5 | इस्लामी शरीअत और क़ुरआन में अल्लाह के गुणवाचक नामों का महत्व | — | 3 |
| 6 | एकेश्वरवाद से सम्बन्धित भ्रम व गुमराही के तीन कारण | — | 4 |
| 7 | अच्छे-अच्छे नाम अल्लाह के | — | 16 |
| 8 | अल्लाह के अच्छे-अच्छे नामों से नैतिक मूल्यों का विकास | — | 21 |
| 9 | स्रोत | — | 28 |


www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

## दो शब्द

अप्रैल सन् 1987 ई० (शाबान सन् 1407 हिज्री) के अन्तिम दिनों में मलेशिया की यात्रा से वापसी पर एक दिन अस्र की नमाज़ के बाद श्रद्धेय मौलाना अबुल हसन अली नदवी ने मुझ से कहा कि अल्लाह के गुणवाचक नामों से सम्बन्धित एक पुस्तिका हिन्दी में लिखकर हिन्दी भाषा भाषी भाई बहनों को अल्लाह के अच्छे-अच्छे नामों की सार्थकता से परिचित कराने की आवश्यकता है। आवश्यक निर्देश देते हुए मौलाना ने यह काम मेरे ज़िम्मे किया। कुछ ही दिन के अन्दर मुझे नदवा की शिबली लाइब्रेरी से सन्दर्भ हेतु पुस्तकें उपलब्ध करायी गईं और मैंने इस विषय पर अध्ययन व संकलन का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

ईश्वर की कृपा से ग्रीष्मावकाश में अपने गाँव में मुझे इस कार्य को पूरा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ और अल्लाह ने इस काम को पूरा फरमाया। यह बात जून 1987 की है।

अल्लाह इस प्रयास को क़बूल फरमाये और अपने अच्छे अच्छे नामों की बरकत को आम कर दे। और इस तुच्छ प्रयास को मानवता के कल्याण व उद्धार का एक ज़रिया बना दे।

स्थान : नैनीताल
दिनाँक : 4 अगस्त 1989 ई०
01 मुहर्रम 1410 हिज्री

**मुहम्मद हसन अंसारी**
**'हसन मँजिल'**
सरकौंडा, सुल्तानपुर
(उ०प्र०)
21 जून 1987 ई०

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्

**हिन्दी भाषा में अल्लाह का अर्थ :** चौदहवीं शताब्दी हि० के प्रारम्भ के विख्यात सन्त मौलाना फ़ज़ले रहमान गँज मुरादाबादी र० ने एक दिन अस्र के समय मौलाना मोहम्मद अली मुँगेरी को पास बुलाया और कहा, "मोल्वी अब्दुल क़ादिर साहब के अनुवाद से दो सौ वर्ष पूर्व भाषा में कुरआन शरीफ़ का अनुवाद हुआ है, हमने देखा है। अल्लाह का अनुबाद जानते हो हिन्दी में क्या है?" मौलाना मुँगेरी तनिक ठहरे। फरमाया—"मनमोहन—मन कहते हैं दिल को, मोहन—मोहने वाला"—यह कहकर चीख़ मारी और आह की।[1]

**ईश्वर और भक्त का सम्बन्ध :** मौलाना अबुल हसन अली नदवी अपनी पुस्तक 'अरकाने अरबा' में लिखते हैं :—

> "नमाज़ (उपासना) की हक़ीकत तथा उसके सार को वही व्यक्ति समझ सकता है जो ईश्वर और भक्त के बीच क़ायम विचित्र व आनन्दमय और कल्पना से परे सम्बन्ध से भली प्रकार अवगत हो। यह एक ऐसा सम्बन्ध है जिस की नज़ीर किसी और जगह नहीं मिल सकती। उसको इस सृष्टि की किसी दो

---

1. 'इरशादे रहमानी' द्वारा मौलाना मुहम्मद अली मुँगेरी पृष्ठ 46.

www.abulhasanalinadwi.org

आत्माओं के पारस्परिक मधुर सम्बन्ध, अथवा मात सृष्टा व सृष्टि, राजा व प्रजा, बलवान व कमजोर, ग़नी व मुहताज और भिखारी व दाता के सम्बन्ध पर भी क़यास (कल्पना) नही किया जा सकता। क्योंकि यह सम्बन्ध इन तमाम रिश्तों से अधिक आनन्दमय, गरिमापूर्ण और इन सबसे अधिक गहरा, मजबूत, गम्भीर और व्यापक है।

**सम्बन्ध गुणों के अधीन हैं :** ईश्वर और भक्त के इस सम्बन्ध को समझाने के लिए ईश्वर के गुणों की जानकारी भी जरूरी है। क्योंकि सम्बन्ध सदैव गुणों के अधीन होते हैं। गुणों ही से उनका अस्तित्व है। यदि हमको किन्हीं दो व्यक्तियों के गुणों का ज्ञान नहीं है और हम सद्व्यवहार व कृतज्ञता के उस रिश्ते से अवगत नहीं हैं जो उन दोनों के बीच क़ायम है, तो हम उन के सम्बन्धों की वास्तविकता कभी नहीं समझ सकते। वह सारे सम्बन्ध जिनको हम जीवन में बरतते हैं जिनसे कानून बनता हैं और जो किसी संस्कृति व समाज को जन्म देते हैं वह सब वास्तव में इन्हीं गुणों के अधीन हैं जिनका प्रभाव मानव समाज पर हम को दिखाई पड़ता है।

**इस्लामी शरीअत और क़ुरआन में अल्लाह के गुणवाचक नामों का महत्व :**

यही कारण है कि तमाम आसमानी किताबों और तमाम धर्मों ने सबसे पहले और सबसे अधिक बल गुणों पर दिया है,

www.abulhasanalinadwi.org

और उसके बाद सम्बन्धों, उपासना, कर्तव्यों तथा आचरण का उल्लेख किया है। समस्त आसमानी धर्मों में कर्म व उपासना और आचार्य संहिता से पहले विश्वास को शुद्ध और सुदृढ़ किया गया है। और अपने समय में प्रत्येक ईशदूत (नबी) ने सबसे पहले शुद्ध ज्ञान, सही पहचान और ईश्वर के सही गुणों व उसकी पवित्रता की शिक्षा दी है। और उनके प्रयासों, उनके प्रचार व प्रसार, उनके संघर्ष का प्रमुख विन्दु यही रहा है। क़ुरआन मजीद जो इन तमाम आसमानी किताबों का संरक्षक है, और जो खुदा की आख़िरी किताब है इस बात की गवाही के लिए काफ़ी है। और यह विषय बार बार और शैली बदल बदल कर इस में बयान किया गया है बल्कि यही, चमत्कार से युक्त इस किताब का, मूल विषय है। अतएव उस संक्षिप्त सूर : इख़लास को, जिस में कुछ एक आयतों के अन्दर एकेश्वरवाद व पवित्रता के अत्यन्त सारगर्भित शब्द आ गये हैं, क़ुरआन मजीद का एक तिहाई हिस्सा बताया गया है। 'सही मुस्लिम' में हज़रत अबू हुरैरा रजी० के वास्ते से उल्लेख है कि यह सूर : एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है। सूर : इख़लास का अनुवाद निम्नवत है :–

अनुवाद : "आप उन लोगों से कहदीजिये कि वह अर्थात् अल्लाह (अपने चमत्कार में) एक है। अल्लाह (ऐसा) बेनियाज़ है (कि वह किसी का मुहताज नहीं और उसके सब मुहताज हैं)। वह न जनता है (जो उसके सन्तान हों) और न वह जना जाता है (जो वह किसी की सन्तान होकर फिर ख़ुदा हो)

www.abulhasanalinadwi.org

और न उसका कोई हमसर (जो पति-पत्नी का रिश्ता क़ायम हो)।''

क़ुरआन मजीद ने अल्लाह के अच्छे अच्छे नामों, उसके कामों, उसकी शक्ति, उसकी रचना व रचनाकारी, उसकी दया, उसके वरदान, उसके क्षमादान, उसके देने व न देने, उसके नफ़ा नुक़सान, उसके ज्ञान, उसके सानिध्य, उसकी व्यापकता, उसके सामर्थ व समृद्धि को इस प्रकार बयान किया है, कि सौन्दर्य व शौर्य, कमाल व पोषण, नेकी और एहसान की अन्तिम मिसाल वन्दे (भक्त) के सामने आ जाती है :–''[2]

अनुवाद : और आसमानों और ज़मीन में उसकी मिसाल (सबसे) उत्तम है। और वह जबरदस्त है, हिकमत वाला है।''

(सूर : रुम–27)

अनुवाद : ''कोई चीज़ उस जैसी नहीं है और वही हर बात का सुनने वाला है, (हर चीज़ का) देखने वाला है।'' (सूर : शूर : 11)

**एकेश्वरवाद से सम्बन्धित भ्रम व गुमराही के तीन कारण :**

अल्लाह के गुणवाचक नामों को लेकर ऐकेश्वरवाद से सम्बन्धित दुनिया के तमाम धर्मों में जो भ्रम तथा गुमराही पैदा हुई है उनके कारणों का उल्लेख करते हुए सय्यद सुलेमान नदवी

---

2. 'अरकाने अरबा' लेखक मौलाना अबुल हसन अली नदवी पृष्ठ 11

www.abulhasanalinadwi.org

अपनी विख्यात पुस्तक 'खुतवात मद्रास' में लिखते हैं :–

"एकेश्वरवाद (तौहीद) के बारे में तीन कारणों से भ्रम और गुमराही पैदा हुई (1) शारीरिक उपमाओं के कारण (2) ऐश्वरीय गुणों को ईश्वर से अलग तथा स्थायी मानने के कारण और (3) कर्म के चमत्कार से धोखा खाना। इस्लाम ने इन गुत्थियों को सुलझाया और इन गलतफ़हमियों को दूर किया।

ईश्वर को, ईश्वर के गुणों तथा परमात्मा व भक्त के पारस्परिक सम्बन्ध को व्यक्त करने के लिए काल्पनिक अथवा भौतिक उपमायें दूसरे धर्मों के लोगों की ईजाद है। फलतः असल ईश्वर तो जाता रहा और उसकी जगह यह उपमायें ईश्वर बन गईं। इन्हीं उपमाओं ने साकार होकर मूर्तियों का रूप धारण कर लिया और मूर्ति-पूजा आरम्भ हो गई।

इस्लाम ने इन तमाम बातों को रोका और इस धारणा को शिर्क बताया। उसने साफ एलान किया कि, "उस (अल्लाह) जैसा और उसके समान कोई चीज़ नहीं"। इस एक वाक्य ने शिर्क की बुनियादों को हिला दिया।

इस्लाम खुदा को 'अबुल आलमीन' अर्थात् दुनिया का बाप नहीं कहता बल्कि 'रब्बुलआलमीन' अर्थात् दुनिया का पालनहार कहता है, क्योंकि उसकी निगाह में 'अब' (बाप) से रब (पालनहार) का स्थान बहुत ऊँचा है।

प्राचीन धर्मों में ऐश्वरीय गुणों को ईश्वर के अस्तित्व से अलग मानना एकेश्वरवाद के विश्वास में भ्रम उत्पन्न करने का

www.abulhasanalinadwi.org

दूसरा कारण है। इस्लाम ने बताया कि गुणों की संख्या और विविधता से विशेष्य में साँख्य और विविधता नहीं।

सूरः हश्र की 22 से 24 आयतों में क़ुरआन का एलान है :-

अनुवाद : "वह अल्लाह है जिसके सिवाय कोई पूज्य (माबूद) नहीं। छिपे और ज़ाहिर का जानने वाला, वह बड़ा मेहरबान और बेहद रहम वाला है वह अल्लाह ही है जिसके सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह बादशाह, पाकज़ात, सालिम (विशुद्ध), अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, जबरदस्त बड़ाई वाला है। पाक है अल्लाह उन बातों से जिनको यह मुश्रिक उसका शरीक ठहराते हैं। वही पैदा करने वाला है, बनाने वाला, सूरतें देने वाला है। जो कुछ ज़मीन आसमानों में है वह उसी की तस्बीह (स्तुति) में लगे हैं। और वह बड़ा ज़ोरदार बड़ा हिकमत वाला है।"

इस्लाम ने बताया कि वही अल्लाह है, वही पैदा करने वाला है, वही बनाने वाला है, वही बादशाह है, वही पाक है, वही मोमिन है, वही ग़ल्बा वाला है, वही ठीक करने वाला है, वही रहमान व रहीम है। एक ही अस्तित्व के यह गुण हैं और वह एक है।

ग़लतफहमी और गुमराही का तीसरा कारण ईश्वर के कार्यों की विविधता है। लोगों ने ग़ल्ती से जाना कि इन विभिन्न

www.abulhasanalinadwi.org

कार्यों को करने वाली अलग अलग हस्तियाँ हैं। तमाम कार्यों के दो बड़े भेद हैं—एक अच्छा दूसरा बुरा। कोई चीज़ अपने आप में न अच्छी है न बुरी। हम अपने प्रयोग से उसे अच्छी या बुरी बना देते हैं। तलवार स्वयं न अच्छी है न बुरी। उसे जैसा प्रयोग करो वैसी ही हैं। अन्धेरा न अच्छा है न बुरा। अगर उसे लोगों के घर में चोरी का ज़रिया बनाया जाय तो बुरा और अगर अपने को छिपा कर नेकियो (सत्कर्म) के करने का समय बनाया जाय अथवा मनुष्य के आराम और राहत का ज़रिया बनाया जाये तो अच्छा है।———अगर ग़लत रास्ते पर चले तो अपमान, सही रास्ते पर चले तो सत्क्रर्म। सही प्रयोग में लाये तो अच्छ हुआ, दुरूपयोग में लाये तो खराब। इसलिए अच्छाई व बुराई को दो चीज़ें समझकर दो ख़ुदा की ज़रूरत नहीं बल्कि एक ही ख़ुदा है जो दोनो का पैदा करने वाला और बनाने वाला है।"[3]

---

3. 'ख़ुतबात मद्रास' द्वारा सय्यद सुलेमान नदवी। ख़ुतबा न० 8

www.abulhasanalinadwi.org

# अच्छे-अच्छे नाम अल्लाह के

## (अस्मा-ए-हुस्ना)

अल्लाह के निन्नाबे गुणवाचक (सिफाती) नाम हैं। इन की सूची देवनागरी लिपि में हिन्दी रूपान्तर सहित यहाँ मौलना मोहम्मद अशरफ़ अली थानवी की पुस्तक "औराद रहमानी" से नक़ल करते हैं :–

| | |
|---|---|
| هُوَاللّٰهُ 1 | اَلَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَالرَّحْمٰنُ 2 |
| हुवल्लाहु | अल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हू अर्रहमान |
| वह अल्लाह | ऐसा है कि कोई माबूद हक़ नहीं सिवाय उसके, बड़ा मेहरबान |
| اَلرَّحِيْمُ 3 | اَلْمَلِكُ 4 |
| अर्रहीम् | अल-मलिकु |
| रहम वाला (दयालु) | बादशाह |

www.abulhasanalinadwi.org

| | |
|---|---|
| اَلسَّلَامُ 6 | اَلْقُدُّوسُ 5 |
| अस्सलामु | अल-क़ुद्दूसु |
| हर आफ़त से सालिम | सब ऐबों (त्रुटियों) से पाक |
| اَلْمُهَيْمِنُ 8 | اَلْمُؤْمِنُ 7 |
| अल-मुहैमिनु | अल-मोमिनु |
| हिफ़ाज़त करने वाला | अमन शान्ति देने वाला |
| اَلْجَبَّارُ 10 | اَلْعَزِيزُ 9 |
| अल-जब्बारु | अल-अज़ीज़ु |
| ठीक करने वाला | शौर्य वाला |
| اَلْخَالِقُ 12 | اَلْمُتَكَبِّرُ 11 |
| अल-ख़ालिक़ु | अल-मुतकब्बिरु |
| पैदा करने वाला | बड़ाई वाला |

www.abulhasanalinadwi.org

| 13 اَلْبَارِئُ | 14 اَلْمُصَوِّرُ |
|---|---|
| अल-बारिओ | अल-मुसव्विरु |
| ठीक बनाने वाला | सूरत बनाने वाला |
| 15 اَلْغَفَّارُ | 16 اَلْقَهَّارُ |
| अल-ग़फ़्फ़ारु | अल-क़ह्हारु |
| बड़े गुनाह बख्शने वाला | सृष्टि पर ग़ालिब |
| 17 اَلْوَهَّابُ | 18 اَلرَّزَّاقُ |
| अल-वह्हाबु | अर्रज़्ज़ाक़ु |
| बिना बदले के देने वाला | रोज़ी देने वाला |
| 19 اَلْفَتَّاحُ | 20 اَلْعَلِيْمُ |
| अल-फ़त्ताहु | अल-अलीमु |
| ज्ञान व दया के द्वार खोलने वाला | बहुत ज्ञान वाला |

www.abulhasanalinadwi.org

| | |
|---|---|
| اَلْبَاسِطُ 22 | اَلْقَابِضُ 21 |
| अल-बासितु | अल-क़ाबिज़ु |
| फैलाने वाला | समेटने वाला |
| اَلرَّافِعُ 24 | اَلْخَافِضُ 23 |
| अर्राफ़ेओ | अल-ख़ाफ़िज़ु |
| बुलन्द करने वाला | पस्त करने वाला |
| اَلْمُذِلُّ 26 | اَلْمُعِزُّ 25 |
| अल-मुज़िल्लु | अल-मुइज़्ज़ु |
| ज़िल्लत देने वाला | इज़्ज़त देने वाला |
| اَلْبَصِيْرُ 28 | اَلسَّمِيْعُ 27 |
| अल-बसीरु | अस-समीओ |
| बहुत देखने वाला | बहुत सुनने वाला |

www.abulhasanalinadwi.org

| اَلْحَكَمُ 29 | اَلْعَدْلُ 30 |
|---|---|
| अल-ह-कमु | अल-अदलु |
| फैसला करने वाला | बहुत इन्साफ़ वाला |
| اَللَّطِيْفُ 31 | اَلْخَبِيْرُ 32 |
| अल-लतीफ़ु | अल-ख़बीरु |
| छिपी चीज़ का जानने वाला या मेहरबान | ख़बर रखने वाला |
| اَلْحَلِيْمُ 33 | اَلْعَظِيْمُ 34 |
| अल-हलीमु | अल-अज़ीमु |
| ढील देने वाला | बहुत बड़ी शान वाला |
| اَلْغَفُوْرُ 35 | اَلشَّكُوْرُ 36 |
| अल-ग़फ़ूरु | अश-शकूरु |
| बहुत गुनाह बख़्शने वाला | क़दरदान |

www.abulhasanalinadwi.org

| اَلْعَلِيُّ 37 | اَلْكَبِيْرُ 38 |
|---|---|
| अल-अलीयु | अल-कबीरु |
| सर्वोत्तम | सब से बड़ा |
| اَلْحَفِيْظُ 39 | اَلْمُقِيْتُ 40 |
| अल-हफ़ीजु | अल-मुक़ीतु |
| बहुत हिफ़ाजत करने वाला | ताक़त वाला या रोजी पहुँचाने वाला |
| اَلْحَسِيْبُ 41 | اَلْجَلِيْلُ 42 |
| अल-हसीबु | अल-जलीलु |
| काफ़ी या हिसाब लेने वाला | बुजुर्गी वाला |
| اَلْكَرِيْمُ 43 | اَلرَّقِيْبُ 44 |
| अल-करीमु | अर-रक़ीबु |
| कृपालु | निगहबान |

www.abulhasanalinadwi.org

| | |
|---|---|
| اَلْمُجِيْبُ 45 | اَلْوَاسِعُ 46 |
| अल-मुजीबु | अल-वासेओ |
| दुआ क़बूल करने वाला | गुंजाइश वाला |
| اَلْحَكِيْمُ 47 | اَلْوَدُوْدُ 48 |
| अल-हकीमु | अल-वदूदु |
| हिकमत वाला | मुहब्बत वाला |
| اَلْمَجِيْدُ 49 | اَلْبَاعِثُ 50 |
| अल-मजीदु | अल-बाएसु |
| बुज़ुर्गी वाला | पैग़म्बर भेजने व मुर्दे को जिन्दा करने वाला |
| اَلشَّهِيْدُ 51 | اَلْحَقُّ 52 |
| अश-शहीदु | अल-हक्कु |
| हाज़िर | सच्चा |

www.abulhasanalinadwi.org

| اَلْوَكِيْلُ 53 | اَلْقَوِيُّ 54 |
|---|---|
| अल-वकीलु | अल-क़वीयु |
| कारसाज़ (जतनकार) | बलवान |
| اَلْمَتِيْنُ 55 | اَلْوَلِيُّ 56 |
| अल-मतीनु | अल-वलीयु |
| मज़बूत | मदद करने वाला |
| اَلْحَمِيْدُ 57 | اَلْمُحْصِيْ 58 |
| अल-हमीदु | अल-मुहसी |
| प्रशंसा वाला | घेरे में लेने वाला |
| اَلْمُبْدِئُ 59 | اَلْمُعِيْدُ 60 |
| अल-मुबदिओ | अल-मुईदु |
| आदिकाल में पैदा करने वाला | दोबारा पैदा करने वाला |

www.abulhasanalinadwi.org

| | |
|---|---|
| اَلْمُحْيِى 61 | اَلْمُمِيْتُ 62 |
| अल-मुह्यी | अल-मुमीतु |
| जिन्दा करने वाला | मौत देने वाला |
| اَلْحَيُّ 63 | اَلْقَيُّوْمُ 64 |
| अल-हइयु | अल-क़य्यूमु |
| ज़िन्दा | क़ायम रहने वाला या<br>कायम रखने वाला |
| اَلْوَاجِدُ 65 | اَلْمَاجِدُ 66 |
| अल-वाजिदु | अल-माजिदु |
| ताक़त वाला | बुजुर्गी वाला |
| اَلْوَاحِدُ 67 | اَلْاَحَدُ 68 |
| अल-वाहिदु | अल-अहदु |
| एकाकी गुणों वाला | अद्वितीय |

www.abulhasanalinadwi.org

| اَلصَّمَدُ 69 | اَلْقَادِرُ 70 |
|---|---|
| अस-समदु | अल-क़ादिरु |
| सब का मक़सूद (लक्ष्य) | क़ुदरत वाला |
| اَلْمُقْتَدِرُ 71 | اَلْمُقَدِّمُ 72 |
| अल-मुक़तदिरु | अल-मुक़द्दिमु |
| क़ुदरत का ज़ाहिर करने वाला | बढ़ाने वाला |
| اَلْمُؤَخِّرُ 73 | اَلْاَوَّلُ 74 |
| अल-मुअख़्ख़िरु | अल-अव्वलु |
| हटाने वाला | सब से पहला |
| اَلْاٰخِرُ 75 | اَلظَّاهِرُ 76 |
| अल-आख़िरु | अज़-ज़ाहिरु |
| सब से पिछला | खुला हुआ अपने गुणों से |

www.abulhasanalinadwi.org

| اَلْبَاطِنُ 77 | اَلْوَالِيُ 78 |
|---|---|
| अल-बातिनु | अल-वाली |
| छिपा हुआ अपनी ज़ात से | मालिक |
| اَلْمُتَعَالِيُ 79 | اَلْبَرُّ 80 |
| अल-मुतआली | अल-बर्रु |
| अति उत्तम | मोहसिन (कृपालु) |
| اَلتَّوَّابُ 81 | اَلْمُنْتَقِمُ 82 |
| अत-तव्वाबु | अल-मुन्तक़िमु |
| रहमत से ध्यान देने वाला | बदला लेने वाला |
| اَلْعَفُوُّ 83 | اَلرَّؤُوْفُ 84 |
| अल-अफ़ूवो | अर्रऊफ़ु |
| बहुत क्षमा करने वाल | बहुत मेहरबान |

www.abulhasanalinadwi.org

| مَالِكُ الْمُلْكِ ذُوالْجَلَالِ وَالْإِكْرَام 86 | اَلْمُقْسِطُ 86 |
|---|---|
| मालिकुल मुल्के जुल-जलालेवल इकराम | अल-मुक़सितु |
| मालिक बादशाही का शौर्य वाला और दयावान | इन्साफ़ करने वाला |
| اَلْجَامِعُ 87 | اَلْغَنِيُّ 88 |
| अल-जामेओ | अल-ग़नीयु |
| इकट्ठा करने वाला | स्वयं धनी (सम्पन) |
| اَلْمُغْنِيُ 89 | اَلْمَانِعُ 90 |
| अल-मुग़नी | अल-मानेओ |
| दूसरों को ग़नी करने वाला | नदेने वाला किसी मसलहत से |
| اَلضَّارَّ 91 | اَلنَّافِعُ 92 |
| अज़्ज़ार्र | अन-नाफ़ेओ |
| नुकसान पैदा करने वाला | नफ़ा देने वाला |

www.abulhasanalinadwi.org

| | |
|---|---|
| اَلنُّوْرُ 93 | اَلْهَادِیْ 94 |
| अन-नूर | अल-हादी |
| रोशनी वाला | हिदायत करने वाला |
| اَلْبَدِیْعُ 95 | اَلْبَاقِیْ 96 |
| अल-बदीउ | अल-बाक़ी |
| ईजाद करने वाला (अद्वितीय) | सब से पीछे रहने वाला |
| اَلْوَارِثُ 97 | اَلرَّشِیْدُ 98 |
| अल-वारिसु | अर्रशीदु |
| सब का वारिस | मसलहत बतलाने वाला |
| اَلصَّبُوْرُ 99 | |
| अस-सबूरु | |
| सब्र वाला | |

**अल्लाह के अच्छे-अच्छे नामों से नैतिक मूल्यों का विकास :**

अल्लाह का प्रत्येक गुणवाचक नाम एक नैतिक मूल्य के विकास की ओर इशारा करता है। इस प्रकार ऊपर अल्लाह के निन्नाबे गुणवाचक नाम लिखे गये हैं उन में प्रत्येक से जिन नैतिक मूल्यों का विकास मानव समाज में अपेक्षित है उनका उल्लेख यहाँ क्रमवार किया जाता है। इसे यहाँ मौलाना मोहम्मद कुतुबुद्दीन की पुस्तक "ज़ादुल उक्बा फ़ी शरह अस्मा-ए-हुस्ना" से नक़ल किया जाता है :–

1. अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत न करे।
2. ईश्वर के भक्तों पर दया करे।
3. अल्लाह के बन्दों पर रहम करे।
4. अपने मन पर नियन्त्रण रखे।
5. ईश्वर के अतिरिक्त शेष और सब कुछ से पाक हो जावे।
6. गुनाह (पाप) और बुराइयों से बचा रहे।
7. लोगों को अपनी वाणी और हाथ से अमन में रखे।
8. अपने वाह्य और अन्तःकरण को पाप और बुराइयों से सुरक्षित रखे।
9. अपने मन पर हावी रहे।
10. कमाल हासिल करके अपनी निराशा दूर करे।
11. माया मोह को तुच्छ समझे।

www.abulhasanalinadwi.org

12. अपने अन्तःकरण में उत्कृष्टतायें और सद्ज्ञान पैदा करे।

13. ,, ,, ,, ,, ,, ,,

14. ,, ,, ,, ,, ,, ,,

15. लोगों की खता (चूक) माफ़ करता रहे।

16. मन और शैतान पर हावी रहे।

17. जान व माल अल्लाह की राह में बेदरेग़ ख़र्च करे।

18. अपने परिवार और ज़रूरतमन्दों को खाना, कपड़ा और ज्ञान देता रहे।

19. ज्ञान और लाभ के द्वार बन्द न करे। झगड़ा व तकरार वालों का फैसला कर दिया करे।

20. लाभदायक ज्ञान प्राप्त करे।

21. जब मन (वासना) उद्दण्डता करने लगे उसपर तँगी करे।

22. जब वह सीधा हो जाये, उदारता करे।

23. अधर्म का नाश। नाहक़ को पस्त।

24. हक़ को बुलन्द।

25. नेकों को प्रतिष्ठित।

26. और बुरों को लज्जित करे।

27. अच्छी बातें सुने।

28. शरीअत (धार्मिक आचार-संहिता, जिन चीज़ों की इजाज़त दे उन्हें देखे।

www.abulhasanalinadwi.org

29. अपना और दूसरों का फ़ैसला करता रहे।
30. न्याय और सीधेपन की रियायत रखे।
31. नर्मी अख्तेयार करे। विनम्र बने।
32. वासना की चालों पर नज़र रखे।
33. अभिषाप (अज़ाब) देने में जल्दी न करे।
34. दीन (धर्म) की तलब (चाह) में बड़ी हिम्मत रखे।
35. लोगों की ख़तायें माफ कर दे।
36. नेमत (वरदान) पर शुक्र अदा करे।
37. दुनियादारों के सामने हिम्मत न हारे।
38. दुनियादारों के सामने हिम्मत न हारे।
39. धार्मिक आचार संहिता (शरीअत) की मान्यताओं की रक्षा करे।
40. भूखों को खिलाये।
41. लोगों की ज़रूरतों में खड़ा हो जाये। अपने मन का हिसाब करता रहे।
42. उत्कृष्ट गुणों से अपने अन्दर श्रद्धा पैदा करे।
43. दया के गुण अपनाये।
44. मन (वासना) व शैतान की देखभाल रखे।
45. अल्लाह के हुक्म को माने।
46. मामलात में लोगों पर तँगी न करे।

www.abulhasanalinadwi.org

47. हिकमत की बातें हासिल करे।
48. दीनदारों से मुहब्बत रखे।
49. आचरण दुरूस्त करके श्रद्धा प्राप्त करे।
50. अपने अन्तःकरण को जीवित करे।
51. अच्छी बातों में हाज़िर रहे।
52. सही बातों में कोशिश करे।
53. लोगों के काम बना दिया करे। परोपकारी बने।
54. धर्म में दृढ़ और मज़बूत रहे।
55. धर्म में दृढ़ और मज़बूत रहे।
56. धर्म की हिमायत करे।
57. प्रशंसा के योग्य बने।
58. अपने कर्म याद रखे।
59. नेक काम में पहल करे।
60. नेक काम बार-बार करता रहे।
61. अपने अन्तःकरण को ज़िन्दा रखे।
62. मन (वासना) को मुर्दा बनावे।
63. अमरत्व प्राप्त करे।
64. उपासनाओं (इबादत) में क़ायम रहे।
65. अल्लाह के अलावा सबसे ग़नी रहे।
66. उत्कृष्टता प्राप्ति से श्रद्धा प्राप्त करे।

www.abulhasanalinadwi.org

67. भक्ति की उत्कृष्टता में अद्वितीय हो जाये।
68. भक्ति की उत्कृष्टता में अद्वितीय हो जाये।
69. धार्मिक उत्कृष्टताओं का केन्द्र विन्दु बने।
70. वासनाओं पर नियन्त्रण रखने वाला रहे।
71. मनोवृतियों पर नियन्त्रण रखने वाला रहे।
72. उपासना में बढ़ा रहे।
73. गुनाहों से हटा रहे।
74. दीन में सबसे आगे और
75. दुनिया में सबसे पीछे रहे।
76. अपने वाह्य को शरीअत से संवारे और
77. अन्तःकरण को वास्तविकता से सजाय रखे।
78. अपने मन का मालिक रहे।
79. मन व शैतान पर हावी रहे।
80. मख़लूक़ (प्राणी जगत) पर एहसान करे।
81. लोगों की याचना स्वीकार कर लिया करे।
82. अल्लाह के लिए बदला लेने में रियायत न करे।
83. लोगों की ख़तायें माफ़ करता रहे।
84. लोगों पर मेहरबान रहे।
85. अपनी बादशाही का मालिक और हुक्मरान रहे और धर्मावलम्बियों (दीनदारों) को प्रतिष्ठा और सम्मान

www.abulhasanalinadwi.org

देता रहे।

86. इन्साफ करता रहे।

87. ज्ञानात्मक और व्यावहारिक उत्कृष्टता को एकत्र करे।

88. स्वयं दुनिया वालों से ग़नी रहे। आत्मनिभर बने।

89. ज़रूरतमन्दों को ग़नी (सम्पन) कर दे।

90, शरीअत के ख़िलाफ़ मौक़े पर उदार न बने।

91. दीन के दुश्मनों को नुक़सान और

92. दीनदारों को नफ़ा पहुँचाता रहे।

93. ईमान की ज्योति प्राप्त करे।

94. अज्ञानों को ज्ञान देता रहे।

95. नेक राहें निकालता रहे। बन्दगी में बेनज़ीर बन जाये।

96. ऐसा कर्म करे जिसका लाभ मरने के बाद भी मिलता रहे।

97. धर्म के ज्ञान में ईशदूतों से मीरास हासिल करे।

98. मसलहत (भलाई) की बातें लोगों को बताता रहे।

99. विषम परिस्थितियों में धैर्य रखे।

हमारे समाज में यह नैतिक मूल्य यदि भरपूर तरीक़े पर रच बस जायें तो समाज में व्याप्त अनेक बुराइयाँ स्वत: समाप्त हो जायेंगी और फिर यह समाज स्वर्ग बन सकता है। भौतिकवाद से ग्रसित आज की दुनिया की अनगिनत समस्याओं का समाधान इस में निहित है। हदीस की प्रमाणिक पुस्तकों

www.abulhasanalinadwi.org

(सहीहैन) में लिखा है कि जिस ने इन नामों को और इन से उत्पन्न होने वाले नैतिक मूल्यों को अपने विश्वास में बिठाया, इन्हें याद किया और व्यवहार में जमा कर लिया वह स्वर्ग में जायगा। ईश्वर हमें ऐसा करने की सद्बुद्धि और विवेक प्रदान करे।

---

www.abulhasanalinadwi.org

# स्रोत


1. क़ुरआन मजीद
2. 'तज़किरा हज़रत मौलाना फ़ज़ल रहमान गँज मुरादाबादी', लेखक: मौलाना अबुल हसन अली नदवी
3. 'अरकाने अरबा' लेखक मौलाना अबुल हसन अली नदवी
4. 'सहीहैन'
5. खुतबात मद्रास' द्वारा सय्यद सुलेमान नदवी
6. 'औराद रहमानी' लेखक मौलाना मौ० अशरफ़ अली थानवी
7. ज़ादुल उक़बा' लेखक मो० कुतुबुद्दीन


www.abulhasanalinadwi.org